आनन्द कुमार त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर
रोहतास महिला कालेज, सासाराम

बी० ए० (प्रतिष्ठा-इतिहास), तृतीय वर्ष
प्रश्नपत्र - VI

"भारत में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन"

19वीं सदी को भारत में धार्मिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण की सदी माना गया है। इस समय कम्पनी की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से आधुनिक तत्कालीन युवा मन चिन्तनशील हो उठा, तरुण व वृद्ध सभी इस विषय पर सोचने के लिए मजबूर हुए। यद्यपि कम्पनी ने भारत के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप के प्रति संयम की नीति का पालन किया, लेकिन ऐसा उसने अपने राजनीतिक हित के लिए किया। पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित लोगों ने हिन्दू सामाजिक रचना, धर्म, रीति-रिवाज व परम्पराओं को तर्क की कसौटी पर कसना प्रारम्भ कर दिया। इससे सामाजिक व धार्मिक आन्दोलन का जन्म हुआ। अंग्रेजी हुकूमत में सदियों की रूढ़ियों से जर्जर एवं अंधविश्वास से ग्रस्त औद्योगिक नगर कलकत्ता, मुम्बई, कानपुर, लाहौर एवं मद्रास में साम्यवाद का प्रभाव कुछ अधिक रहा। भारतीय समाज को पुनर्जीवन प्रदान करने का प्रयत्न प्रबुद्ध भारतीय सामाजिक एवं धार्मिक सुधारकों, सुधारवादी ब्रिटिश गवर्नर जनरलों एवं पाश्चात्य शिक्षा के प्रसार ने किया। भारत में ब्रिटिश सत्ता के पैर जमने के बाद यहाँ का जनमानस पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति के सम्पर्क में आया, परिणामस्वरूप नवजागरण की शुरुआत हुई। भारतीय समाज की आंतरिक कमजोरियों का पक्ष उजागर हुआ। अंग्रेजी शिक्षा ने भारत के धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। अंग्रेजी शिक्षा व संस्कृति का प्रभाव सर्वप्रथम भारतीय मध्यम वर्ग पर पड़ा। तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं बाह्य आडम्बरों को समाप्त करने में पाश्चात्य शिक्षा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Scanned with CamScanner

इस शिक्षा के प्रभाव में आकर ही भारतीयों ने विदेशी सभ्यता व साहित्य के बारे में ढेर सारी जानकारी एकत्र की तथा अपनी सभ्यता से उनकी तुलना कर सच्चाई को जाना। प्रारम्भ में अर्थात 1813 ई० तक कम्पनी प्रशासन ने भारत के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मामलों में अहस्तक्षेप की नीति का पालन किया। क्योंकि वे सदैव इस बात से सशंकित रहते थे कि इन मामलों में हस्तक्षेप करने से रूढ़िवादी भारतीय लोग कम्पनी की सत्ता के लिए खतरा उत्पन्न कर सकते हैं। परन्तु 1813 ई० के बाद कम्पनी शासन ने अपने औद्योगिक हितों और व्यापारिक लाभ के लिए सीमित हस्तक्षेप प्रारम्भ कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप कालान्तर में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों का जन्म हुआ। "

हीगल :- "पुनर्जागरण के बिना कोई भी धर्म सम्भव नहीं।"

Scanned with CamScanner